भा०कृ०अनु०प० – पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 24-08-2026

कृषि परामर्श: झारखंड में एल नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु उपाय

दिनाँक 13 अगस्त 2026 से 19 अगस्त 2026 के दौरान झारखंड राज्य में कुल औसत वर्षा 141.4 मिमी दर्ज की गई, जबकि सामान्य वर्षा 72.9 मिमी रही। इस प्रकार राज्य में कुल मिलाकर 94% अधिक वर्षा दर्ज की गई है। हालाँकि यह अधिक वर्षा सामान्य से ऊपर है, लेकिन इसका वितरण अत्यंत असमान रहा है। कुछ जिलों में अत्यधिक वर्षा (257% से 298% तक अधिक) जैसे लातेहार, लोहरदगा, पश्चिमी सिंहभूम और खूंटी में दर्ज की गई, जबकि कुछ जिलों में गंभीर वर्षा की कमी (–55% से –85%) जैसे साहेबगंज, पाकुड़, गोड्डा और देवघर में देखी गई। इस प्रकार की स्थिति **एल नीनो** प्रभाव के अनुरूप है, जिसमें मानसून "कभी अत्यधिक वर्षा और कभी सूखा" जैसी अनियमितता दिखाता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), रांची केंद्र के पूर्वानुमान के अनुसार 24 अगस्त 2026 से 30 अगस्त 2026 के दौरान झारखंड के अधिकांश क्षेत्रों में हल्की से मध्यम वर्षा के साथ कहीं-कहीं भारी बारिश, आंधी और बिजली गिरने की संभावना, तापमान सामान्य से थोड़ा कम रहेगा, वातावरण नम रहेगा है। । इस परिस्थिति में किसानों को निम्नलिखित उपाय अपनाने की सलाह दी जाती है:

- अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में खेतों से तत्काल जल निकासी सुनिश्चित करें।
- खेत के मेड़ों की तुरंत मरम्मत करें ताकि मृदा कटाव रोका जा सके।
- जल निकासी नालियों को साफ रखें ताकि पानी का ठहराव न हो।
- उपलब्ध जल का उपयोग करते हुए वर्षा जल संचयन (तालाब/फार्म पॉन्ड) को बढ़ावा दें।
- धान में जल स्तर 2–5 सेमी तक सीमित रखें, अधिक जलभराव से बचें।
- रोपाई वाले खेतों में 48 घंटे से अधिक पानी न रुकने दें।
- वर्षा के बाद अतिरिक्त जल जमाव तुरंत निकालें।
- यदि नमी कम हो तो सिंचाई केवल तब करें जब मिट्टी में हल्की दरारें दिखाई दें।
- भारी वर्षा से पहले यूरिया का टॉप ड्रेसिंग न करें, ऐसा करने पर पोषक तत्वों के लीचिंग का खतरा बढ़ सकता है।
- नाइट्रोजन का प्रयोग 3–4 विभाजित (उपरिवेशन) खुराकों में करें।
- नीम-कोटेड यूरिया का उपयोग करें।
- साफ मौसम में सिंचाई के बाद ही उर्वरक का प्रयोग करें।
- खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के 15–20 दिन बाद अनुशंसित खरपतवारनाशी (जैसे बिसपैरीबक सोडियम, 2,4-D) का प्रयोग करें।
- 50–55 रोपाई दिन पर हाथ से निराई-गुड़ाई करें।
- जहाँ संभव हो कोनो-वीडर का उपयोग करें।
- फसल अवशेषों से मल्चिंग (पलवार) कर नमी संरक्षण करें।
- मौसम में नमी और तापमान परिवर्तन के कारण ब्लास्ट ,शीथ ब्लाइट, तना छेदक का खतरा बढ़ सकता है।
- नियमित फसल निगरानी करें और प्रारंभिक लक्षण पर नियंत्रण करें।
- भारी वर्षा और तेज हवा के दौरान खेत में उर्वरक या कीटनाशक का छिड़काव न करें, रसायनों का छिड़काव केवल साफ मौसम में करें।
- आंधी-तूफान के समय खुले खेतों में काम करने से बचें, पेड़ों के नीचे या ऊँचे स्थानों पर न जाएँ और हमेशा सुरक्षित स्थान जैसे पक्की इमारत में शरण लें।